IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

किषोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. ममता बंसल, एसोसिएट प्रोफेसर, सूरतगढ़ बी.एड. कॉलेज, सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर (राज.)

सांराश :–

षिक्षा समाज के विकास व कल्याण का महत्वपूर्ण साधन है। यदि समाज में षिक्षा नहीं होगी तो विकास की गति हीन/क्षीण हो जायेगी और विकास न होने से समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। समाज का विकास करने के लिए किषोरों का सर्वांगीण विकास करना अनिवार्य है। किषोरों का सामाजिक और संवेगात्मक विकास उसकी उपलब्धियों को प्रभावित करता है। क्या किषोरों के सामाजिक और संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है ? इस प्रष्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध का चुनाव किया गया है। इस शोध का मुख्य उद्देष्य किषोरों के सामाजिक और संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस शोध हेतु शोधकर्त्री द्वारा अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है। न्यादर्ष के अन्तर्गत सूरतगढ़ शहर के कक्षा 9 के 100 किषोरों को लिया गया है तथा आंकड़ों का संकलन करने हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा स्वयंनिर्मित सामाजिक एवं सवेगात्मक विकास प्रमापनी का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विष्लेषण प्रोडक्ट मोमेंट सहसंबंध विधि द्वारा किया गया है। शोधकर्त्री ने इस शोध से निष्कर्ष निकाले है कि सामाजिक और संवेगात्मक विकास का किषोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तकनीकी शब्दः–
किषोर, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास आदि।

प्रस्तावनाः–

किषोरावस्था विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में किषोर के सभी पक्षों का तीव्र गति से विकास होता है तथा अपने अंतिम रूप को प्राप्त करता है। किषोरावस्था में बालक के समाज के संपर्क से आने उसका सामाजिक व संवेगात्मक विकास तीव्रता से होने लगता है। षिक्षा द्वारा इस विकास को सही दिषा प्रदान करने का कार्य किया जाता है। किषोर के सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास का उसकी उपलब्धियो से क्या संबंध है ? दोनों प्रकार के विकास का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है ? आदि महत्वपूर्ण प्रष्नों के उतर प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा इस विषय को चुना गया है।

उपलब्धि व्यक्ति में श्रेष्ठता के एक खास स्तर को प्राप्त करने की क्षमता होती है तथा षिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धि का अर्थ विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किये जाने वाला ज्ञान व कौषल होता है। फ्रीमैन के अनुसार '' ज्ञान, कौषल तथा ज्ञानोपयोग को पाठ्यक्रम के आधार पर मापन करने की अवधि ही उपलब्धि परीक्षण कहलाता है तथा मापन का अंक शैक्षिक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

उपलब्धि कहलाती है। अतः विद्यार्थी द्वारा विद्यालय के अन्तर्गत ग्रहण किया जाने वाला ज्ञान व कुषलता व क्षमता शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।

शोध की आवष्यकता व महत्वः–

वर्तमान युग में एक विद्यार्थी अपने शैक्षिक जीवन में अधिक से अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा यह उपलब्धि अभिप्रेरक विद्यार्थी के प्रयास के लिए बल के समान कार्य करता है। माध्यमिक स्तर पर आते–आते बालक किषोरावस्था में पहुंच जाता है। किषोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी योग्यताओं, क्षमताओं का प्रभाव पड़ता है। किषोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक विकास व संवेगात्मक विकास का कैसे और कितना प्रभाव पड़ता है ? दोनों चरों में संबंध किस प्रकार का है ? जैसे महत्वपूर्ण प्रष्नों के उतर प्राप्त करने तथा शैक्षिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों के निवारण के लिए प्रस्तुत शोध लाभकारी सिद्ध होगा।

उद्देष्यः– शोध कार्य के उद्देष्य निम्नानुसार है :–

1. किषोरों के सामाजिक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किषोरों के संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँः–

शोधकर्त्री ने शोध हेतु उद्देष्यों को आधार बनाकर परिकल्पनाओं का निर्माण किया है, जो निम्नानुसार है :–

1. किषोरों के सामाजिक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. किषोरों के संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिसीमनः–

प्रस्तुत शोध कार्य का सीमांकन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य को श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक स्तर के किषोरों तक सीमित रखा गया है।
2. इन शोध में माध्यमिक स्तर के किषोर बालकों के अन्तर्गत किषोर व किषोरियों दोनों का अध्ययन किया गया है।
3. संबंधित शोध अध्ययन के न्यादर्ष के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के 100 किषोर बालकों का अध्ययन किया गया है।

शोध विधि :–

1. प्रत्येक शोध अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता को अनुसंधान की किसी न किसी विधि का चुनाव करना आवष्यक होता है।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

2. प्रस्तुत शोध के उद्देष्यों व प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चुनाव कर अध्ययन किया गया है।

संपूर्ण जनसंख्या का वह अंष अथवा भाग, जिसमें समस्त जनसंख्या के गुण अथवा विषेषताएँ समाहित होती है तथा जो समस्त जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है, को न्यादर्ष कहते है। संबंधित शोध को न्यादर्ष का वितरण निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थी		योग
किषोर	किषोरियाँ	
50	50	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध के न्यादर्ष के अन्तर्गत श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक स्तरके 100 किषोर बालकों को लिया गया है, जिसमें से 50 किषोर व 50 किषोरियां शामिल है।

विष्लेषण :–

परिकल्पना 1 :–

'' किषोरों के सामाजिक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ''

तालिका संख्या – 2

क्र0स0	चर	मध्यमान	सहसंबंध	परिणाम
1	सामाजिक विकास	40.91	0.492	सार्थक प्रभाव पड़ता है
2	शैक्षिक उपलब्धि	50.72		

उपरोक्त सारणी में किषोरों के सामाजिक विकास व शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित आंकड़ों का सांख्यिकी विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है। किषोरों के सामाजिक विकास व शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़ों का मध्यमान क्रमषः 40.91 तथा 60.72 प्राप्त हुआ है तथा दोनों चरों के मध्य सह–संबंध गुणांक 0.492 प्राप्त हुआ है, जिससे स्पष्ट होता है कि किषोरों के सामाजिक विकास व शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इस आधार पर परिकल्पना संख्या –1 ''किषोरों के सामाजिक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है '' स्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 2 '' किषोरों के संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

तालिका संख्या – 3

क्र0स0	चर	मध्यमान	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
1	संवेगात्मक विकास	38.44	0.453	सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2	शैक्षिक उपलब्धि	60.72		

उपरोक्त तालिका द्वारा किषोरों के संवेगात्मक विकास तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित आंकड़ों का सांख्यिकीय विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है। किषोरों के संवेगात्मक विकास व शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़ो का मध्यमान क्रमषः 38.44 तथा 60.72 प्राप्त हुआ है तथा दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

संवेगात्मक विकास का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना संख्या – 2 '' किषोरों के संवेगात्मक विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत होती है।

निष्कर्षः–

उपरोक्त विष्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैः–

1. किषोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक विकास का सार्थक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक विकास जितना अधिक होगा, शैक्षिक उपलब्धि भी उतनी ही अधिक होगी।
2. किषोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास का प्रभाव भी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है अर्थात् संवेगात्मक विकास का स्तर जितना उच्च होगा, शैक्षिक उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. बेस्ट जॉन डब्ल्यू, '' रिसर्च इन एज्युकेषन'', प्रेन्टिस हॉल, नई दिल्ली 1963
2. भार्गव महेष, ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', एच.पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा।
3. गैरेट, हैनरी ई, एवं वुडवर्थ आर. एस., '' षिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'' कल्याणी पब्लिषर्स, लुधियाना।
4. कपिल, एच.के. '' अनुसंधान की विधियाँ'' हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाषक, आगरा।
5. राय, पारस नाथ (1999) '' अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
6. शर्मा, आर.ए. (2012) '' षिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'' लाल बुक डिपो, मेरठ
7. पी.डी. पाठक, '' षिक्षा मनोविज्ञान'' (2013)
8. गैरेट एच.ई. आर.एस. वुडवर्थ (2004), स्टेटिक्स इन साईक्लोजी एण्ड एजुकेषन'' , न्यू देहली, प्रोग्रोन इनटरनेषनल पब्लिषर्स।
9. यादव मन्जू (2004) '' भारतीय षिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ